2 “दोहे” (कवि- कबीर,रहीम,वृंद)

शब्दार्थ

शब्द-अर्थ	शब्द-अर्थ
जनमिया -जन्म लेने वाला	मौन-चुप्पी
सुबरन -स्वर्ण, सोना	दादुर –मेंढक
कलस –कलश, घड़ा	वक्ता –वक्ता, बोलने वाला
सुरा –शराब	खैर –कत्था
निंदै –निंदा करता है	मदपान –नशा
सोई –उसे, उसकी	सकल –सारा
नियरे –पास	जहान –संसार
छवाय –बनाकर	जड़मति –मूर्ख
सुभाय –स्वभाव	सुजान-चतुर, समझदार
सिष –शिष्य	रसरी –रस्सी
कुंभ –घड़ा	सिल –पत्थर
काढ़े –निकालता है	निसान –चिह्न, निशान
खोट –दोष, कमी	हिय –हृदय, मन
सयानो –समझदार	हेत-अहेत हित-अहित, भलाई- बुराई
पावस –वर्षा ऋतु	निरमल –निर्मल, स्वच्छ
कोइल –कोयल	आरसी –आईना, दर्पण